ISSN : 2349-1876 (Print) / ISSN : 2454-1826 (Online)

Double Blind Peer-reviewed Refereed Research Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES RESEARCH

Volume-IX, Issue-III, July-September, 2022 (SPECIAL ISSUE)

SPECIAL ISSUE

रामधारी सिंह दिनकर

EDITOR

Dr. Sarita Sinha

Assistant Professor and HOD (Hindi)

Jagat Narain Lal College

(A constituent unit of Patliputra University), Near Moti Chowk, Khagaul, Patna (Bihar)

Pincode - 801105

A Quarterly Multidisciplinary Double-Blind Peer-reviewed International Refereed Research Journal

IJISSHR

(INTERNATNIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE SOCIAL SCIENCE & HUMANITIES RESEARCH)

ISSN : 2349-1876 (Print) / ISSN : 2454-1826 (Online)

Volume-IX, Issue-III, July-September, 2022

SPECIAL THANKS

Dr. Vinit Kumar, Director, CSIRS

&

Prof. Harish Arora

Professor, Deptt. of Hindi

P.G.D.A.V. College (Eve.)

University of Delhi

Nehru Nagar, New Delhi-110065

EDITOR

Dr. Sarita Sinha

Assistant Professor and HOD (Hindi)

Jagat Narain Lal College

(A constituent unit of Patliputra University), Near Moti Chowk, Khagaul, Patna (Bihar)-801105

1. Editing of the Research Journal is processed without any remittance. The selection and publication is done after recommendation of subject expert referee.
2. Thoughts, language, vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.
3. In any condition if any National / International University denies to accept the research paper published in the Journal then it is not the responsibilities of Editor, publisher and Management.
4. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor, unless it will assumed as disobedience of copyright rules.
5. All the legal undertaking related to this journal is subjected to be hearable at Lucknow jurisdiction only.

International Journal of Innovative Social Science & Humanities Research

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

VOLUME – IX, ISSUE-III July – September (2022)

CONTENTS

No.	Topic	Author Name	Page No.
1.	सनातन नर-नारी के प्रतिकात्मकता की द्योतक है दिनकर की 'उर्वशी'	हरीश अरोड़ा	01-03
2.	संस्कृति के चार अध्याय : एक सांस्कृतिक अवलोकन	चंदन कुमार	04-08
3.	'कुरुक्षेत्र' में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीयता की अनुगूँज	विजय ज्योति	09-13
4.	राष्ट्रकवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	कुमारी रागिनी	14-16
5.	दिनकर कृत 'हिमालय' में राष्ट्रीय चेतना	नियति कल्प	17-21
6.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में उपनिवेशवाद का विरोध और राष्ट्रीयता	डॉ. राकेश रंजन	22-27
7.	राष्ट्रीय काव्यधारा के यशस्वी कवि : दिनकर	डॉ. सूर्य प्रताप	28-31
8.	दिनकर-काव्य में वर्णित भारतीय संस्कृति के विविध रूप	डॉ. बिक्रम कुमार साव	32-35
9.	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	इंदु पी.	36-39
10.	रश्मिरथी में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. मनीषा शर्मा	40-43
11.	रश्मिरथी में राष्ट्रीय चेतना	राहुल कश्यप	44-47
12.	रामधारी सिह दिनकर के रचनाओ में राष्ट्र भावना	राजश्री	48-52
13.	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर	आरती काछी	53-55
14.	राष्ट्रकवि दिनकर के साहित्य में राष्ट्रीयता की अनुगूँज	कुमारी सबिता	56-60
15.	रामधारी सिंह दिनकर और राष्ट्रीय-चेतना	डॉ. स्मिता कुमारी	61-63
16.	'रश्मिरथी' में रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीयता	डॉ. पुलकित कुमार मण्डल	64-66
17.	कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना	केशव दहिया	67-71
18.	कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. सुभाष कुमार	71-72
19.	राष्ट्रकवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	संजु शर्मा	73-75
20.	राष्ट्रकवि दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. इंदिरा वी.	76-78
21.	दिनकर-साहित्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना	प्रतीक कुमार	79-81
22.	दिनकर की उर्वशी : (अप्सराओं और वेश्याओं का तुलनात्मक अध्ययन)	मनीषा	82-84
23.	दिनकर-साहित्य में राष्ट्रीय व प्रगतिवादी चेतना	डॉ. सुनील कुमार	85-88

संपादकीय

बिहार के मुंगेर जिला के सिमरिया नामक गाँव की धरती को अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से गौरवान्वित करने वाले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' महज साहित्यकार ही नहीं बल्कि अपनी कलम की शक्ति से देश और समाज में जागरण की लहर पैदा करने वाले एक प्रगतिशील विचारक व क्रांतिकारी भी थे।

इनकी काव्य रचनाओं में कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी जैसे प्रबंध काव्यों के साथ-साथ रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वंद्वगीत, सामधेनी, धूप और धुआँ, बापू, इतिहास के आँसू, नील कुसुम, मगध महिमा, परशुराम की प्रतीक्षा आदि रचनाएँ अपने ओजस्वी एवं प्रगतिशील स्वर तथा व्यापक मानवता के कारण 'मील का पत्थर' साबित हुयीं।

'राष्ट्रकवि' की संज्ञा से विभूषित कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाएँ स्वाधीनता के 74 वर्षों बाद भी उतनी ही प्रासंगिक लगती है जितनी तात्कालीन परिवेश में रही होंगी, जब कवि ने इन रचना कर्म को अंजाम दिया था। ऐसे महान विचारक, चिंतक, साहित्यकार एवं जनप्रतिनिधि रूपक कवि 'दिनकर' को आजादी के अमृत महोत्सव में श्रद्धांजलि देते हुए उनकी रचनाओं के पुनर्पाठ, चिंतन-मनन एवं नई पीढ़ी के छात्र-छात्राओं तक उनकी विचारधारा को पहुँचने के उद्देश्य से कवि 'दिनकर' पर यह विशेषांक निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है ताकि हमारी राष्ट्रीय एकता एवं उसके सांस्कृतिक पहलुओं से नयी पीढ़ी को जोड़ा जा सके। मेरी इस कोशिश को अंजाम तक पहुँचाने में आई.जे.आई.एस.एच.आर. (IJISHR) के चीफ एडिटर डॉ. विनीत कुमार जी एवं पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) के प्रो. हरीश अरोड़ा जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इनके सफल मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह विशेषांक समय पर प्रकाशित हो पा रहा है। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) छाया सिन्हा जी के सुझाव पर इस दिशा में मैंने अपना कदम बढ़ाया। इस पत्रिका में अपने आलेख भेजने वाले विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों से जुड़े तमाम शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने मेरे इस महायज्ञ में एक-एक आहूति दे कर इसे पूर्णता की ओर अग्रसर किया है। इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ तमाम लोगों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। इस पत्रिका का दिनकर 'विशेषांक' के रूप में सम्पादन कार्य करते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है।

मुझे उम्मीद है कि आगे कुछ और साहित्यिक व आलोचनात्मक कार्यों को करने में आप सभी का सहयोग मुझे मिलता रहेगा।

डॉ. सरिता सिन्हा